मूल असमीया पाठ	हिन्दी अनुवाद
सादरे भृंगार धरि प्रक्षालिला पाव। षड़र्घे करिला पूजा बुलि बहु भाव॥ कुसुम चंदन दिब्य बस्त्र अलंकार। नाना द्रव्य दिया अर्च्चिलंत बारे बार॥201	भृंगार जल से प्रक्षालन किये पाव। पूजा के विविध अर्घों से विविध भाव॥ कुसुमचन्दनदिव्य वस्त्रअलंकार। कई द्रवों से अर्चन किया बारंबार॥201
बुलि आति स्तुति बाणी संतोषिला मन। षड़रसे पंचामृते कराइल भोजन॥ कर्पूर तांबुल दिला भोजनर शेषे। गृह ब्यवहार राजा करिला निशेषे॥ 202	अति स्तुति वाणी से संतुष्ट किया मन। षड़रस पंचामृत कराया भोजन॥ भोजन के बाद कर्पूरताम्बूल दिये। राजा ने अनेक अच्छे व्यवहार किये॥ 202
केकय राजार आति देखिया भकति। भैलंत संतुष्ट दशरथ महामति॥ करिलंत केकयक प्रशंसा आशेष। अनंतरे भैला आसि रजनी प्रबेश॥203	केकय राजा की देखकर अति भक्ति। होते हैं संतुष्ट दशरथ महामति॥ राजा केकय की प्रशंसा की अशेष। उसके बाद राजा का रजनी प्रवेश॥203
उत्तम मंदिरे रत्नमय आसनत। सुकोमल शय्यात शुतिला दशरथ॥ सुखे नृपतिर भैल रजनी प्रभात। स्नान दान करि आसि बसिला सभात॥204	रत्नमय आसन दिया उत्तम घर। सोये दशरथ सुकोमल शय्या पर॥ कट गयी दशरथ की रात सुख से। स्नानदान सम्पन्न कर बैठे सभा में॥204
प्रभात समये उठि केकय नृपति। स्नान दान तर्पण करिला महामति॥ बिधिर नियम समर्पिया नृपबर। पातिलंत सभा कैकयीर सयंबर॥205	प्रातःकाल उठ गये केकय नृपति। स्नानदानतर्पण करते महामति॥ विधि पर समर्पण कर नृपवर। बुला ली है सभा कैकेई का स्वयंबर॥205
रत्नमय आसन थैलंत स्थाने स्थाने। ताते आसि बसिला नृपतिगणे माने॥ बसि आछे दशरथ सबारे माजत। तान तेजे संकुचित राजागण यत॥206	स्थान-स्थान रत्नमय आसन हैं रखे। सम्मान के साथ वहाँ राजागण बैठे॥ बैठे पड़े दशरथ सबके बीच में। अन्य जितने राजा बैठे संकुचित से॥206

ज्वले उत्पल येन सूर्यर उदय।
दशरथ समे सेहिमते राजाचय॥
केकय नृपति आतिशय बुद्धिमंत।
यथायोग्य समस्ते राजाक अर्च्चिलंत॥207
बुलिला सबाको पाछे सुमधुर बाणी।
कैकयी नामत मोर आछे कन्याखानि॥
आति शिष्टमती कन्या आसि समज्याक।
आपोन इच्छाये कन्या बरय याहाक॥208

ताहाने हैबेक सिटो कन्या महासती।
अहि बुलि कैकयीर पाशक नृपति॥
निज गुरु ब्राह्मणक दिलंत पठाइ।
आनियोक कन्या गैया सभाक आताइ॥209

शुनि पुरोहिते गैया बुलिला कन्याक।
आसियो कैकेयी पितृबाक्य समज्याक॥
शुनिया कन्यार हरिषर नाहि पार।
पिंधिला उत्सुके दिब्य बस्त्र अलंकार॥
एकचित्त हुया शुना सभासद लोक।
गुचोक संसारभय राम बुलियोक॥210

दुलड़ी

कैकेयी कामिनी सुचंद्रबदनी
काचिलंत बहु भावे।
करि लीलागति समज्याक प्रति
चलि यांत भूमिपावे॥
कृश मध्यदेह बुलंते हालय
चले आति लयलासे।
अनेक सुंदरी तांक मध्ये करि
बेढ़ि यांत चारि पाशे॥211

सूर्य के उदित से कमल खिले हों ज्यों।
दशरथ के साथ वैसे राजा बैठे हों॥
केकयराज हैं बुद्धिमान अतिशय।
राजाओं को अर्चित करते महाशय॥207
उन्होंने सबसे सुमधुर वाणी कही।
मेरी एक कन्या है गुणी कैकयी रही।
अति शिष्ट है वह पहुँची समाज में।
जिन्हें चाहे वरण करें निज इच्छा से॥208

उनकी ही हो जायेंगी कन्या महासती।
कहकर कैकेयी के समीप नृपति॥
भेजकर बोले निज गुरु ब्राह्मण को।
ले आयें जाकर सभा में मेरी कन्या को॥209

कन्या से बोले सुन पुरोहित जाकर।
सभा में आओ पितृवाक्य का मानकर॥
सुनकर कन्या को मिला हर्ष अपार।
उत्सुकता से पहने वस्त्र अलंकार॥
एकचित्त होकर सुनो हे सभासदो।
संसार का भय न रहें रामनाम लो॥210

दुलड़ी

कैकेयी कामिनी सुचंद्रबदनी
सजी विविध भाव से।
लचीली चाल से समाज के लिए
चली भूमि पर पाव से॥
मध्य शरीर क्षीण चलते आंदोलित
चलती लचीली चाल से।
अनेक सुंदरियाँ उसे मध्य में ले
बढ़ती हैं चारों ओर से॥211

त्रैलोक्यमोहिनी गजेंद्र गामिनी
पाइला सयंबरशाला।
प्रबेशिला गइ मेरुत उदय
येन चंद्रमार कला॥
भैलंत बिस्मय यत राजाचय
कन्यार रूप देखिया।
चाहंत निरीखि अमृतक देखि
येन लुभियार हिया॥212

रूप बिपरीत देखि बिमोहित
भैल यत राजाचय।
स्थिर नोहे मन पीड़िले मदन
देखे सबे तमोमय॥
कंपय शरीर कतो बेलि स्थिर
भैल राजागण यत।
अन्यो अन्ये माति कहे कथा आति
रूपर किनो महत्त्व॥213

स्वर्गे हन्ते किबा आसिल उर्ब्बशी
किबा रति तिलोत्तमा।
इंद्रर घरिणी किबा आइल शची
किबा अपेस्बरी हेमा॥
रोहिणी पार्ब्बती किबा लक्ष्मी देवी
आसि आछे मूर्ति धरि।
इटो त्रैलोक्यत इहेन रूपक
नुहि आने सरिबरि॥214

एक हाते जल झारी आउर हाते
धरिया पुष्पर माला।
राजागण माजे आपन सदृश
बर निरीक्षंत बाला॥
सखीगणे समे फुरंत सुंदरी

त्रैलोक्यमोहिनी गजेंद्र गामिनी
पहुँची स्वयंबरशाला।
प्रवेश किया मेरु में जाकर
मानो चंद्रमा की कला॥
हुआ विस्मय जितने राजा हैं
देखकर रूप कन्या का।
देखने की इच्छा अमृत को देख
मानो हृदय लोभी का॥212

रूप विपरीत देख विमोहित
हुए जितने राजाचय।
स्थिर नहीं मन पीड़ा है मदन
देखते सब तमोमय॥
काँपते शरीर कब तक स्थिर
जितने राजा हैं।
एक दूसरे से अति रूप कथा
महत्व कहते हैं॥213

स्वर्ग से मानो आयी हो उर्वशी
या रति तिलोत्तमा।
इंद्र की पत्नी आयी क्या शची
या अपेश्वरी हेमा॥
रोहिणी पार्वती या लक्ष्मी देवी
करती धारण मूर्ति।
इस त्रिलोक में इस रूप की
नहीं कोई बराबरी॥214

एक हाथ में जल झारी दूसरे में
लेकर पुष्प की माला।
राजाओं के बीच अपने सदृश
वर निरखती बाला॥
सखियों के संग फिरती सुंदरी

गोटे गोटे राजा चाइ॥
सबे राजागणे बोले मने मने
मोके बरिबेक पाय॥215

एक-एक राजा को लेख।
सब राजागण बोले मन ही मन
वरन करें मुझे देख॥215

पाचे सुदर्शन नामे एक राजा
सबाको बोले बचन।
सुदक्षिणा नामे कन्यार काहिनी
शुनियोक राजागण।
मगध राजार जीउ सुदक्षिणा
परम पद्मिनी कन्या।
सर्ब्बगुणयुत रूप अद्‌भुत
त्रैलोक्यमोहिनी धन्या॥216

सुदर्शन नाम के एक राज ने
सबसे कहा वचन।
सुदक्षिणा नाम की कन्या की कथा
सुनें राजागण॥
मगध के राजा के प्राण सुदक्षिणा
परम पद्मिनी कन्या।
सर्वगुण से युक्त रूप अद्‌भुत
त्रैलोक्यमोहिनी धन्या॥216

तान सयंबरे गैलो निरंतरे
आछो राजागण यत।
हाते माल्य धरि बर अनुसरि
फुरे कन्या समाजत॥
सूर्य्यबंशे राजा आछिला दिलीप
परम गुणे महंत।
माथे माल्य दिया गैया सुदक्षिणा
दिलीपक बरिलंत॥217

उसके स्वयंबर में चले निरंतर
जितने भी राजा थे।
हाथ में माला ले वर के संधान में
फिरती कन्या समाज में॥
सूर्यवंश में राजा थे एक दिलीप
गुणों से परम महंत हैं।
शिर पर माला दे चली सुदक्षिणा
उन्हें वरण करती है॥217

इउ महासती येन सुदक्षिणा
समस्त गुणक धरे।
कोन पुण्यवंत आछे भाग्यवंत
नाजानो काहाक बरे॥
अहिमते राजा सबे अन्यो अन्ये
कन्यार गुण बखाने।
पाचे धीरि धीरि कैकेयी सुंदरी
गैला दशरथ स्थाने॥218

यह भी महासती जैसी सुदक्षिणा
गुणों की अधिकारिणी।
कौन पुण्यवान है भाग्यवान
जाने किसे वरण करेगी॥
इसतरह राजा सब एक दूसरे से
कन्या की करते आस।
फिर धीरे-धीरे कैकेयी सुंदरी
चली दशरथ के पास॥218

तांक देखि कन्या गुणे मने मने
एंते हैबा मोर पति।

उन्हें देख कन्या सोचती मन से
ये ही होंगे मेरे पति।

इहान समान इटो पृथिवीते नाहिके आन नृपति॥	इनके जैसा इस धरती पर नहीं कोई नृपति॥
इहान आगत नज्वलय केव यत आछे राजागण।	इनके सामने न शोभा पाते जितने हैं राजागण।
त्रिभुवने सार रूप चमत्कार साक्षते येन मदन॥219	त्रिभुवन सार रूप चमत्कार साक्षात मानो मदन॥219
इहान अधीन सकलो नृपति आछंत खाटिया नित।	इनके अधीन सभी नृपति करते काम नित्य।
इहाकेसे मइ बरिबो बुलियो दृढ़ करिलंत चित॥	इन्हें ही मैं वरण करूंगी किया दृढ़ चित्त॥
परम सादरे दशरथ शिरे दिला निया पुष्पमाला।	परम सादर से दशरथ के शिर पर रख दिया पुष्पमाला।
चरणत धरि करि नमस्कार बरिलंत बरबाला॥220	चरण स्पर्श कर किया नमस्कार वरण करती बरबाला॥220
हेन देखि यत लोक समज्यार करे जय जय ध्वनि।	उसे देख कर समाजिक लोग करते हैं जयध्वनि।
सार्थक बरक बरिला सुंदरी कन्या बर बिचक्षणी॥	सार्थक वर का वरण हुआ है कन्या है विचक्षणी॥
बर कन्या दुइको प्रशंसा करिल समस्त लोके सादरि।	वर-बधू को प्रशंसा मिली लोगों से सम्मान मिला।
सयंबर रंग उत्सव मंगल देखिल नयन भरि॥221	स्वयंबर का आनंद मंगल उत्सव नयन भर कर देखा॥221
कैकेयीक पाया दशरथ राजा भैला आति कृतकृत्य।	कैकेयी को पाकर राजा दशरथ हुए अति कृत्यकृत्य।
हरिषे बिस्तर मथिया सागर पाइलंत येन अमृत॥	विस्तार से सहर्ष मथकर सागर मिला मानो अमृत॥
केकय राजार आनंद अपार जमाइ पाइ दशरथ।	केकय राजा का अपार आनंद जमाई मिलले दशरथ॥
बिधि ब्यवहारे कन्या संप्रदान करिलंत महारथ॥222	विधि व्यवहार से कन्या संप्रदान करते हैं महारथ॥222

उत्सुके मनत हय हस्ती रथ दास दासी ग्राम देश। सुवर्ण रजत मुकुता माणिक यौतुक दिला अशेष॥ बियार सभात यत असंख्यात आछिलंत राजगण। यौतुक संभार दिलंत अपार नृपतिर तुषि मन॥223	मन में उत्सुकता घोड़ा हाथी रथ दासदासीग्रामदेश। सोना चाँदी मुक्ता माणिक दिया यौतुक अशेष॥ विवाह की सभा में जितने असंख्य आये थे राजागण। यौतुक संभार दिया अपार नृपति तृप्त कर मन॥223
केकय नृपति अनेक भकति समज्याक संतोषिल। कुसुम चंदने बस्त्र अलंकारे सबाको राजा तोषिल॥ पाया सतकार हरिष अपार देखि सुखे सयंबर। राजाक सादरि गैला घराघरि राजा प्रजा निरंतर॥224	केकय नृपति ने अनेक भक्ति से समाज को संतुष्ट किया। कुसुमचन्दन वस्त्र अलंकार सब राजा को किया॥ मिला सत्कार हर्ष अपार देख सुख से स्वयंबर। राजा को सादर चले अपने घर राजा-प्रजा निरंतर॥224
राजा दशरथ पूरि मनोरथ कैकेयीक लैला संगे। महा कतूहले बाद्य सुमंगले गृहक गैलंत रंगे॥ शुना सभासद रामायण पद रामक हुया समुख। डाकि बोला हरि संसारक तरि लभिबा परम सुख॥225	राजा दशरथ कर पूर्ण मनोरथ कैकेयी को ले संग में। महा कुतूहल वाद्य सुमंगल घर गए रंग मन से॥ सुनो सभासद रामायण पद राम का हों सम्मुख। बोलो हरि हरि संसार से उद्धार मिलेगा परम सुख से॥225